Dr. Nutisri Dubey
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A III Sem (2024-2026)
CC-10 : Contemporary Western Philosophy
Hegel : Dialectical Method
(हेगल : 'द्वन्द्वन्याय पद्धति')

ऐतिहासिक दृष्टि से द्वन्द्वन्याय (Dialectic) सिद्धान्ततः विवादास्पद विषयों पर वाद-विवाद, बहस और परिचर्चा करने का एक शालीन और विनम्र तरीका है। हेगल के दर्शन में विचार को अमूर्त तथा अपूर्ण अवस्थाओं से मूर्त तथा अधिक पूर्ण अवस्थाओं की ओर विकास (संक्रमण) को द्वन्द्वन्याय कहा जाता है। यह संभूति की प्रक्रिया है जो पक्ष, विपक्ष तथा समन्वय के रूप में तब तक चलती रहती है, जब तक कि पूर्णता की अवस्था को प्राप्त न हो जाय।

हेगल के दर्शन की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसका विकासवाद है। विकास की प्रक्रिया निषेध (विरोध) के द्वारा संचालित होती है। हेगल के अनुसार निषेध स्वरूपतः अमूर्त नहीं, बल्कि मूर्त (Determinate Negation) होता है। निर्विशिष्ट (आत्यन्तिक) निषेध या विरोध का हेगल के दर्शन में कोई स्थान नहीं है। चेतना के एक स्तर का विकास इसी विरोध के कारण उत्पन्न होता है। विकास की पराकाष्ठा में ज्ञान और सत्ता में पूर्ण समन्वय स्थापित हो जाता है। इस दृष्टि से विरोध या भेद विकास की प्रक्रिया में सहयोगी एक अवस्था मात्र है। यह स्थिरता या ठहराव नहीं, बल्कि टकराव या विरोध के परिणामस्वरूप गतिशीलता या समन्वय है। अतः हेगल के अनुसार सत्ता कोई स्थिर सुसंगति नहीं, बल्कि एक गतिशील एवं सामंजस्यपूर्ण निकाय है।

हेगल के अनुसार आत्यन्तिक विरोध का वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है। आत्यन्तिक विरोध (व्याघात) कुछ तर्कशास्त्रियों की बौद्धिक क्रीड़ा का विषय मात्र है। हेगल के दर्शन में भेद का अर्थ है विरोध, जो सदैव समन्वय अथवा अभेद पर आधारित होता है। निरपेक्ष प्रत्यय के विकास के लिए अभेद (Identity) की अपेक्षा विरोध (difference) अधिक महत्वपूर्ण होता है। प्रत्येक पदार्थ वस्तु में दो परस्पर विरोधी गुण विद्यमान होते हैं। यहाँ पर हेगल प्राचीन ग्रीक दार्शनिक एम्पेडाक्लीज के 'प्रेम' एवं 'घृणा' अथवा 'सामञ्जस्य' एवं 'संघर्ष' के सिद्धान्त से प्रभावित प्रतीत होता है। हेगल भेद, विरोध और निषेध को सभी प्रकार के परिवर्तन और विकास का आधार मानता है। हेगल के दर्शन में विकास भेद से विशिष्ट अभेद की ओर होता है। हेगल ने परंपरागत तर्कशास्त्र के अभेद-नियम,

आकारिक

व्याघात-नियम और मध्यम परिहार-नियम का निषेध करके अपने दर्शन में 'मूर्त निषेध' (विरोध) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। 'मूर्त निषेध' की अवधारणा हेगलीय द्वन्द्वन्याय का मेरुदण्ड है।

इस प्रकार हेगल आत्यन्तिक विरोध का परित्याग करके विरोध को भेद के अर्थ में ग्रहण करता है। भेद या सार्थकता उसके अभेद पर आश्रित होने में निहित है। उदाहरण के लिए अधोलिखित कथनों को लिया जा सकता है।—

(1) श्वेत रंग अश्वेत नहीं है।

(2) श्वेत रंग काला नहीं है।

हेगलीय दृष्टि से 'श्वेत' (White) और 'अश्वेत' (Non-White) परस्पर व्याघाती हैं। अतः वास्तविकता के धरातल पर इन दोनों पदों में कोई विरोध नहीं हो सकता है। वास्तव में 'अश्वेत', 'श्वेत' का पूरक-वर्ग (Complementary Class) है। 'अश्वेत' के अन्तर्गत 'श्वेत' को छोड़कर विश्व की सभी वस्तुएँ (नदी, पहाड़, मेज, कुर्सी, पशु-पक्षी आदि) सम्मिलित हो जाती हैं। इसके विपरीत द्वितीय कथन (श्वेत रंग काला नहीं है) सार्थक है। यही सच्चा विरोध है क्योंकि यहाँ पर 'श्वेत' और 'कालापन' में विरोध (भेद) होते हुए भी उसमें रंग की एकता (अभेद) है। अतः हेगल के अनुसार अभेदोन्मुख भेद ही वास्तविक विरोध हो सकता है। वस्तुतः इस मूर्त विरोध के अर्थ में ही निषेध की सार्थकता है।

हेगल निषेध के महत्व पर बल देते हुए कहता है— 'प्रत्येक निषेध विशेषीकरण है (Every Negation is Determination)। प्रत्येक निषेध किसी न किसी भावात्मक आधार पर टिका होता है। जब हम कहते हैं कि अमुक वस्तु सफेद नहीं है, तो इसका निहितार्थ यह है कि वह वस्तु किसी दूसरे रंग की है अर्थात् एक रंग का निषेध करने से उसमें अन्य रंगों का आरोपण हो जाता है। अतः निषेध स्वीकरण पर आधारित होता है।

निरपेक्ष प्रत्यय के विकास की प्रक्रिया 'त्रिक नियम' (Triadic Law) पर आधारित है। त्रिक नियम हेगल के द्वन्द्वन्याय का अभिन्न अंग है। इसके अन्तर्गत पक्ष (Thesis), विपक्ष (Anti-Thesis) और समन्वय (Synthesis), द्वन्द्व न्याय के ये तीन पहलू सम्मिलित हैं। पक्ष और विपक्ष दोनों सापेक्ष हैं क्योंकि दोनों अपने आप में अपूर्ण हैं। प्रत्येक पक्ष

के स्वरूप में ही इसका विरोधी तत्व निहित होता है। पक्ष का विरोधी विपक्ष है। लेकिन पक्ष और विपक्ष का समन्वय तीसरी अवस्था में होता है। हेगल ने तीसरी अवस्था अर्थात् समन्वय को विपक्षों का अभेद (Identity of opposites) कहा है।

पक्ष, विपक्ष और समन्वय की यह त्रयी बार-2 आती है। पक्ष और विपक्ष का यह विरोध जब तीसरी अवस्था में सामञ्जस्यपूर्ण होकर समन्वय को प्राप्त कर लेता है, तो यह तीसरी समन्वयात्मक अवस्था पुनः पक्ष बन जाती है। यद्यपि पक्ष और विपक्ष की अपेक्षा समन्वयात्मक अवस्था अधिक परिपूर्ण है, तथापि इसने अभी निरपेक्ष पूर्णता को नहीं प्राप्त किया है। त्रिक नियम के अन्तर्गत पक्ष विपक्ष एवं समन्वय का यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक समन्वय (Synthesis) और पूर्णत्व के बीच की दूरी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हो जाती।

हेगल के दर्शन में प्रथम त्रयी विपक्षों का अभेद है। यह सत् (Being) और असत् (Nothing) के अभेद के फलस्वरूप विकसित संभूति (Becoming) है। सत् → पक्ष, असत् → विपक्ष और संभूति → समन्वय है। हेगल का कथन है- 'विशुद्ध सत् विशुद्ध असत् है' (Pure being is pure Nothing)। संभूति इन दोनों के योग से ही संभव है। असत् ही वह जाति-व्यवच्छेदक लक्षण है, जो सत् रूपी जाति को संभूति रूपी उपजाति में परिणत कर देता है।

हेगलीय तर्कशास्त्र में तार्किक प्रत्यय के तीन रूप उल्लेखनीय हैं- सत् (Being), सारतत्व (Essence) और अन्तर्बोध (Notion) ये तीनों अवस्थाएँ क्रमशः पक्ष, विपक्ष और समन्वय की अवस्थाएँ हैं। हेगल के अनुसार सत् के भी तीन रूप हैं - गुण, परिमाण और माप। इन्हें क्रमशः पक्ष, विपक्ष और समन्वय कहा जा सकता है। सारतत्व के अन्तर्गत क्रमशः अधिष्ठान (Ground), अधिष्ठित (Grounded) और अस्तित्व (Existence) आते हैं। इन्हें क्रमशः पक्ष, विपक्ष और समन्वय कहा जा सकता है। अस्तित्व के अन्तर्गत पारस्परिक निर्भरता के संबंधों का समन्वय हो जाता है। अन्तर्बोध सिद्धान्त (Theory of Notion) के अन्तर्गत सामान्यता (Universality), विशिष्टता और वैयक्तिकता का समन्वय हो जाता है। अन्तर्बोध सिद्धान्त में पक्ष विपक्ष और समन्वय की त्रयी के अनेक रूपों का समाहार अन्त में निरपेक्ष प्रत्यय के रूप में

होता है। आत्मनिष्ठ प्रत्यय और वस्तुनिष्ठ प्रत्यय इन दोनों का पूर्ण समन्वय निरपेक्ष प्रत्यय के अन्तर्गत हो जाने पर विकास प्रक्रिया का अन्तिम लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। यही विकास की सर्वोच्च अवस्था और अन्तिम ध्येय है। इस प्रकार मानव इतिहास एवं संस्कृति, कला, धर्म एवं दर्शन में निरपेक्ष प्रत्यय की ही अभिव्यक्ति होती है। निरपेक्ष प्रत्यय की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति दर्शनशास्त्र में होती है।

प्रकृति के क्षेत्र में भी द्वन्द्वन्याय या त्रिक नियम के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं का विकास होता है। किन्तु ये अवस्थाएँ दैशिक और कालिक नहीं अपितु तार्किक हैं अर्थात् विकास की विभिन्न अवस्थाओं में तार्किक सम्बन्ध है। हेगल के अनुसार विकास के इन विभिन्न सोपानों में क्षैतिजिक (Horizontal) सम्बन्ध नहीं, बल्कि लम्बवत् सम्बन्ध (Vertical Relation) है। प्रकृति में भी विकास की तीन अवस्थाएँ हैं।—

(1) यान्त्रिकी (Machanics)— यह प्राकृतिक विकास की प्रथम अवस्था है जिसे 'पक्ष' कहा जा सकता है। यह सुप्त चैतन्य की अवस्था है, जिसे जड़-जगत् कहा जा सकता है। जड़-जगत् यान्त्रिक नियमों से संचालित हो जाता है। इसके अन्तर्गत देश-काल, गति, जड़-द्रव्य (Matter), गुरुत्वाकर्षण शक्ति आदि का अध्ययन किया जाता है। यह परिमाणात्मक भेद की अवस्था है।

(2) भौतिकी (Physics)- यह विकास की दूसरी अवस्था है जिसे प्रथम अवस्था का विरोधी या विपक्ष (Anti- thesis) कहा जा सकता है। धीरे-2 जड़ रूप रासायनिक रूप में विकसित होने लगता है। यह गुणात्मक भेद के आविर्भाव की अवस्था है। इस स्तर पर प्रकाश, ताप, विद्युत, चुम्बकत्व, रासायनिकता आदि शक्तियों का विकास होता है।

(3) जैविकी अथवा प्राणिशास्त्र (Organics) — यह प्राकृतिक विकास की समन्वयात्मक अवस्था है। इसके अन्तर्गत प्राणि-जगत् का अध्ययन किया जाता है। मानव-शरीर ही प्राकृतिक जगत् के विकास की अन्तिम अवस्था है। इसके बाद आत्मा का विकास प्रारम्भ हो जाता है।

प्रकृति आत्मा की एक अविकसित या अल्पविकसित अवस्था है। जिस प्रकार प्राकृतिक जगत् में विभिन्न अवस्थाओं का विकास

त्रिक नियम के अनुसार होता है, उसी प्रकार यह नियम आत्मा के प्रत्यय पर भी लागू होता है। आत्मा के प्रत्यय के अन्तर्गत तीन अवस्थायें इस प्रकार हैं—

(1) आत्मनिष्ठ आत्मा (Subjective Mind) — यह पक्ष है।

(2) वस्तुनिष्ठ आत्मा (Objective Mind) — यह विपक्ष है।

(3) निरपेक्ष आत्मा (Absolute Mind) — यह समन्वय है।

निरपेक्ष आत्मा विकास की सर्वोच्च अवस्था है जिसके अन्तर्गत आत्मा की दोनों पूर्ववर्ती अवस्थाओं अर्थात् आत्मनिष्ठ आत्मा और वस्तुनिष्ठ आत्मा का समन्वय हो जाता है। यह पूर्ण समन्वय की अवस्था है; जिसमें अन्य सभी भेद, विरोध, विषयी, विषय, प्रकृति, आत्मा आदि का समावेश सामञ्जस्यपूर्ण रूप में हो जाता है। इस अवस्था में निरपेक्ष आत्मा आत्म पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। इसलिए यह पुनः पक्ष नहीं बनता है। किन्तु इस अवस्था में भी आत्मा की अभिव्यक्ति तीन रूपों में होती है — सौन्दर्यशास्त्र, धर्म-दर्शन और दर्शनशास्त्र।

सौन्दर्यशास्त्र के क्षेत्र में भी हेगलीय द्वन्द्व-न्याय का त्रिक नियम लागू होता है। यहाँ पर कला पक्ष (Thesis), संगीत विपक्ष (Anti-Thesis) और काव्य समन्वय (Synthesis) है। काव्यों में महाकाव्य (Epic), गीत काव्य (Lyric) और नाटक (Drama) क्रमशः काव्य के बाल्य-काल, संक्रमणकाल और प्रौढ़ रूप हैं। किन्तु कला से भी ऊँचा स्थान धर्म का है।

कला की अपेक्षा धर्म अधिक अन्तर्मुखी होता है। हेगल के अनुसार धर्म के तीन प्रमुख पक्ष हैं — जीव, ईश्वर और जीव तथा ईश्वर का संबंध। धर्म में सीमित जीव का असीमित ईश्वर से संबंध स्थापित किया जाता है। जहाँ पूर्वी धर्म ईश्वर-प्रधान और यूनानी धर्म जीव-प्रधान हैं, वहीं ईसाई-धर्म में ईसा के रूप में जीव और ईश्वर दोनों का समन्वय हो जाता है।

कला एवं धर्म क्रमशः कल्पना प्रधान एवं भावात्मक होते हैं। किन्तु दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत बौद्धिक अनुशीलन एवं ज्ञान का प्राथमिक महत्व होता है। अतः निरपेक्ष प्रत्यय की पूर्ण अभिव्यक्ति का माध्यम दर्शनशास्त्र है। दर्शनशास्त्र का संबंध आत्म-साक्षात्कार की सर्वोच्च अवस्था (निरपेक्ष

आत्मा) से है। इस प्रकार निरपेक्ष आत्मा के क्षेत्र में भी त्रिक नियम लागू होता है। कला पक्ष, धर्म विपक्ष और दर्शन समन्वय है। वस्तुतः दर्शन में ही निरपेक्ष प्रत्यय को पूर्ण अभिव्यक्ति होती है। इस समन्वयात्मक अवस्था को प्राप्त कर लेना ही विकास का अन्तिम लक्ष्य है।

हेगल की द्वन्द्वन्याय में निषेध या विरोध को सभी प्रकार के परिवर्तन, विकास और क्रान्तियों का आधार माना गया है। किन्तु सम्पूर्ण विश्व की विभिन्न संस्कृतियों और समाजों के सन्दर्भ में यह मान्यता सही नहीं है। वास्तव में मानव जीवन की सामाजिक और राजनीतिक संरचना का आधार सदैव विरोध, निषेध एवं दमन को मानना अनिवार्य नहीं है। पक्ष (Thesis) और विपक्ष (Antithesis) भले ही अपूर्ण हो, तथापि यह आवश्यक नहीं है कि वे परस्पर विरोधी हो। चूँकि पक्ष और विपक्ष परस्पर अपूर्ण हैं, इसलिए उन्हें एक दूसरे की आवश्यकता है। पक्ष एवं विपक्ष की अपूर्णता से तर्कतः यह निष्कर्ष स्थापित नहीं किया जा सकता कि वे परस्पर विरोधी हैं। अपूर्णता के प्रत्यय से यह सिद्ध होता है कि वे परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं। अतः त्रिक नियम पर आधारित हेगलीय द्वन्द्वन्याय दोषपूर्ण है।

त्रुटिपूर्ण होते हुए भी हेगल की द्वन्द्वन्याय ने यूरोप के वैचारिक जगत् में महान क्रान्ति को जन्म दिया। आज के वैज्ञानिक विकास ने यह सिद्ध कर दिया है कि विश्व का संचालन अपरिवर्तनशील नियमों से नहीं, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील और गतिशील नियमों के अनुसार ही समझा जा सकता है। उसने विकासवादी प्रक्रिया में प्रगति के विचार पर बल देते हुए इस मान्यता को स्थापित किया कि किसी वस्तु के यथार्थ स्वरूप को उसके विरोधी स्वरूप से तुलना करके ही सम्यक् रूप से ही जाना जा सकता है। महान विचारक कार्ल मार्क्स ने उसके द्वन्द्वन्याय का अनुसरण करते हुए संशोधित रूप में उसे अपनाया। किन्तु उसने हेगल के आध्यात्मवाद के विपरीत द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दर्शन और समाजवादी विचारधारा का प्रवर्तन किया।